ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वर नगर, दरभंगा।

पी०-एच० डी० उपाधि के लिए प्रस्तावित शोध-प्रारूप

मानविकी संकाय

विषय: हिन्दी

<u>प्रस्तावित शोध शीर्षक:</u>

"राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन दर्शन की **प्रासंगिकता**"

शोध निर्देशक

डॉ0 आर0 बी0 यादव "आर्य"

अध्यक्ष हिन्दी, विभाग

एल0 सी0 एस0 कॉलेज, दरभंगा

बिनीता कुमारी

E2209007

शोधार्थी

पी०-एच०डी० उपाधि के लिए प्रस्तावित शोध-प्रारूप

मानविकी संकाय

विषय: हिन्दी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

प्रस्तावित शोध शीर्षक:

"राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन दर्शन"

विषय का महत्व / प्रस्तावना :

'उपन्यास' शब्द का मूल अर्थ होता है 'निकट रखी हुई वस्तु'। 'उप' का अर्थ होता है 'निकट' और 'न्यास' का अर्थ है 'रखी हुई'। आधुनिक समय में 'उपन्यास' शब्द अंग्रेजी में 'नॉवेल ' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। गुजराती में इसे 'नवल कथा' और मराठी में 'कादम्बरी' कहा जाता है। आधुनिक युग में किसी एक दीर्घ कथा का वर्णन गद्य में किया जाना ही उपन्यास कहलाता है।

अत: यह कहा जा सकता है कि उपन्यास केवल कथा नहीं अपित जीवन की व्याख्या है। कथा के माध्यम से उपन्यासकार मनुष्य के जीवन में विभिन्न स्वरूप और समस्याओं का रहस्योद्घाटन करते हुए उसका विवेचन करता है तो इसका मतलब यह हुआ कि उपन्यास जीवन की व्याख्या है। इस व्याख्या के पीछे उपन्यासकार का एक दृष्टिकोण काम करता है। इसी दृष्टिकोण के अनुरूप 'जीवन की व्याख्या ही उपन्यासकार का 'जीवन दर्शन' होता है।

जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति के लिए उपन्यासकार सामान्य तौर पर दो विधियों का प्रयोग करता है। एक विधि नाटकीय होती है जिसमें नाटककार की तरह उपन्यासकार जीवन के विभिन्न रंगों को प्रस्तुत करता है। दूसरी विधि होती है-प्रत्यक्ष। इस विधि में उपन्यासकार कथा मे स्वयं जीवन का व्याख्याकार होता है।

उपन्यासकार और उपदेशक में अन्तर होता है। उपन्यासकार कलाकार होता है। उपदेशक अपने उपदेश का प्रचारक होता है। उपन्यासकार अपनी रचना में ध्वनित करता है। उपन्यास में जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति के लिए नाटकीय विधि एक हद तक ही उचित हैं।

राहुल सांकृत्यायन एक ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षण को महत्वपूर्ण समझा है और उसका उपयोग रचनात्मक कार्यों में किया है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में जीवन के प्रत्येक पक्ष का चित्रण पाठकों को प्राप्त होता है। उन्होंने मानव जीवन के स्वरूप और उद्देश्यों की विशद और गम्भीर व्याख्या की है। वे व्यक्ति तथा समाज के लिए मानव जीवन को महत्वपूर्ण समझते हैं। इसके लिए वे यात्राओं और प्रेम व्यवहार के महत्व को स्वीकार करते हैं। मानव जीवन की प्रगति के लिए साम्यवादी विचार की स्थापना पर उनका पूर्ण विश्वास है। वे समाज को रूढि मुक्त देखने की कामना करते हैं। साथ ही कर्तव्य पालन को मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा आधार मानते हैं। मानव जीवन से उनका अभिप्राय है जन्म से लेकर मृत्यु तक की अवधि। विवेकी और सभ्य होने के कारण मनुष्य का जीवन अन्य प्राणियों से महत्वपूर्ण है। मनुष्य का जीवन दो रूपों में बंटा हुआ है। एक ओर वह निजी आवश्यकताओं, सुरक्षा और विकास को लेकर 'व्यक्तिगत' है तो दूसरी और समाज के विकास के लिए उसका योगदान है तो सामूहिक और सामाजिक है। जीवन के प्रति राहुलजी आस्थावान हैं। विकास के लिए सतत प्रयत्नशीलता में उनका गहरा विश्वास है। वे यह मानते हैं कि विफलता मनुष्य के जीवन का पाठ है। अतः मनुष्य को निराशा में डूबकर प्रयत्नशीलता का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

जीवन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए 'जीने के लिए' उपन्यास में राहुल जी लिखते हैं, 'मनुष्य को उच्चादर्शों के लिए जीना चाहिए। उच्चादर्श वे हैं जिनसे अधिकाधिक मनुष्य का हित हो। उच्चादर्शों के लिए मनुष्य को बड़े-से-बड़े त्याग करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। स्वदेश के लिए जीवन-त्याग से बढकर जीवन का कोई और मूल्य नहीं। संसार की प्रत्येक वस्तु नश्वर है। इसलिए मनुष्य को मृत्यु से भयभीत नहीं होना चाहिए। ' इस सम्बन्ध में देवराज कहता है, 'जीवन को गंवाना ही है तो किसी अच्छे काम के लिए-और जिस देश ने इस शरीर को जन्म दिया उसकी करोड़-करोड़ संतानों के लिए अर्पण करने से बढ़कर इस जीवन का दूसरा उपयोग क्या हो सकता है?'

राहुल जी के अनुसार आजकल अधिकांश लोग स्वार्थी और स्व-विकास लोलुप हैं। उन्हें परहित से ज्यादा चिन्ता स्वहित की रहती है। इससे बचने का एक मात्र उपाय है कि मनुष्य 'परहित' के लिए जीना सीखे। इसी से उसका जीवन सुखमय होगा तथा चित्त को सच्ची शांति मिलेगी।

राहुल सांकृत्यायन विलक्षण प्रतिभा के स्वामी थे। यायावरी उनकी प्रवृत्ति थी। जीवन को भी वे एक यात्रा मानते थे। इस यात्रा के दौरान उन्होंने अनेक अनुभव प्राप्त किये। उनका मानना है कि यात्रा से मनुष्य के ज्ञान की परिधि विकसित होती है। यह ज्ञान व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में सहायक होता है। उनके उपन्यासों के नायक और मुख्य पात्र यायावर हैं। यात्रा प्रेमी हैं। अतः उपन्यास में जगह-जगह की यात्राओं के प्रसंग आये हैं और उनके वर्णन सजीव हो गए हैं।

राहुल सांकृत्यायन ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व को नहीं मानते थे। सामान्य तौर पर यह स्वीकार किया जाता है कि विभिन्न रूपों में विचरण करने वाली आत्माएँ परम सत्ता परमात्मा के अंश हैं। ये आत्माएँ अज्ञान और स्वार्थ

के कारण स्वयं को भिन्न समझती हैं। इस द्वैत भाव को हटाकर सभी आत्माओं को एकता में बाँधने वाला सूत्र है प्रेम का। पं० रामचन्द्र शुक्ल ने प्रेम की परिभाषा देते हुए कहा है, 'विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति विशेष लगाव होने पर लोभ, वह सात्विक रूप प्राप्त करता है, जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं। ('लोभ और प्रीति', चिन्तामणि, प्रथम भाग, रामचन्द्र शुक्ल)

राहुल सांकृत्यायन ने प्रेम को जीवन का स्वाभाविक 'रस' माना है। उनके अनुसार जीवन में आनन्द और उत्साह के संचार के लिए प्रेम आवश्यक सूत्र है। वह निराश व्यक्ति में गति और स्फूर्ति प्रदान करता है। प्रेमः कर्तव्य से पलायन नहीं है। वह मनुष्य को कर्तव्य पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है। 'जीने के लिए' उपन्यास में इस मत का समर्थन किया गया है। इस उपन्यास में देवराज और जेनी ब्राउन दोनों पति-पत्नी हैं। उनका प्रेम आदर्श प्रेम है। सामान्य तौर पर यह देखा जाता है कि विवाहोपरान्त पति-पत्नी अपना कर्तव्य भूल कर सुखमय जीवन में लिप्त हो जाते हैं किन्तु देवराज और जेनी ब्राउन को सुखमय जीवन का भोग आकर्षित नहीं करता है। देवराज स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेता है और जेनी यूरोप में अंतर्राष्ट्रीय सेना में भर्ती होकर अपने कर्तव्य का पालन करती है। इससे यह प्रमाणित हो जाता है कि वे दोनों वैवाहिक सुखमय जीवन से ज्यादा महत्वपूर्ण अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को समझते हैं।

समाज के सफल संचालन के लिए कुछ नियम बनते हैं और उनका विकास होता है। कालान्तर में ये परम्पराएँ रुढ़ियों का रूप धारण कर लेती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि आमजन परम्परा के प्रेमवश रूढिवादी धर्म का अन्धा अनुकरण करते रहते हैं। चाहे परिस्थितियाँ क्यों न बदल जाएँ ? तकनीक और विज्ञान का चाहे कितना भी विकास क्यों न हो जाए ? राहुल सांकृत्यायन, ऐसे विचार के कटु अवलोचक हैं। वे संसार की अन्य सभी चीजों की तरह धर्म

को भी परिवर्तनशील मानते हैं। परिस्थितियों के परिवर्तन होने पर धर्म में भी परिवर्तन होना चाहिए वे परलोकवाद , पुनर्जन्म, ईश्वरोपासना आदि से संबंधित धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं के विरोधी हैं। इसे वे मनुष्य और सभ्यता के विकास का बाधक मानते हैं। उनके अनुसार रूळ विचार मनुष्य को जीवन के प्रति उदसीन और अकर्मण्य बना देते हैं। धर्म के सम्बन्ध में राहुल जी का दष्टिकोण वैज्ञानिक है। उनके अनुसार धर्म एक कर्तव्य है और ऐसा कर्तव्य मानव मात्र के हित के लिए सबसे बड़ा धर्म है। राहुल सांकृत्यायन ने परलोकवाद के स्थान पर लोकवाद की स्थापना की है। उनके मतानुसार परलोक की कल्पना पर जीवित रहने की अपेक्षा लोक को ही सुखमय बनाना चाहिए। जीवन को सुखमय बनाने के लिए संसारोपलब्ध सभी वस्तुओं का उपभोग करना चाहिए। राहुलजी के उपन्यासों से खाओ , पियो, मौज करो का भोगवादी सिद्धान्त पुष्ट होता है। उनका भोगवाद लिप्त होकर भोग करना नहीं बल्कि आवश्यकता पर आधारित है।

राहुल सांकृत्यायन संसारोपलब्ध सभी वस्तुओं को उपभोग्य मानते हैं। वे मांस भक्षण निन्ध नहीं समझते हैं। एक स्थान पर वे लिखते हैं , 'अपने राम ने तो जिस दिन मनुस्मृति में पढ़ा कि शूकर-मांस के पिंड से पितर वर्षों तृप्त रहते हैं, उसी दिन निश्चय कर डाला कि पितृऋण से उऋण होना होगा और 'जो इच्छा करि हैं मनमाहीं , हरिप्रताप कछु दुर्लभ नाहीं। ' घरेलु-बनैल दोनों से अनेक बार तर्पण हो चुका है। राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों के सभी पात्र मांस भक्षण , मदिरा पान , नर-नारियों के विलासी जीवन आदि को प्राथमिकता से स्वीकार करते हैं। अतिथि सत्कार में मांस का अत्यन्त महत्व है। पर्व त्यौहार में अनेक प्रकार के मांस पकाये जाते हैं। अपने 'मधुर स्वप्न' उपन्यास में उन्होंने दिगम्बरा देवी के मंदिर की प्रशंसा की है। वहाँ परिचारिकाएँ नंगी रहती हैं। इससे स्पष्ट

पता चलता है कि राहुलजी आवश्यकता आधारित निर्लिप्त भोगवादी प्रवृति के पक्षधर हैं और उनके द्वारा भारतीय संस्कृति की मनमानी वस्तुवादी-भौतिकवादी व्याख्या की गई है। इस सम्बन्ध में डॉ. नगेन्द्र का विचार है, कुछ बातें निःसंदेह आपत्तिजनक हैं। उदाहरण के लिए जिस उदारता से राहुल जी के पात्र एक दूसरे पर चुम्बनों की बौछार करते हैं वह अनैतिक न मानी जाय, परन्तु अभद्र अवश्य है। वास्तव में रस की उदभावना करने का यह सस्ता उपाय इतने असंयम के साथ व्यवहृत किया गया है कि उससे अरूचि होने लगती है। डॉ. गोपीनाथ तिवारी के अनुसार, 'चुम्बन, आलिंगन द्वारा पाठकों की सस्ती पाशविकता उभार कर राहुलजी ने अपने पाठकों की संख्या बढ़ाने का प्रयन्त किया है।'

सामाजिक रुढ़ियों के रूप में आजकल जाति-पाँति की समस्या सामाजिक कुरीतियों का रूप ले चुकी है। पूर्वजों द्वारा जो कर्माधारित वर्ण व्यवस्था सामाजिक संचालन के लिए लागू की गई थी वह समय के साथ अपनी उपयोगिता खोकर आपसी भेदभाव का कारण बनती जा रही है और जन्म के आधार पर लोगों को ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहा जाने लगा है। इसके कारण सामाजिक संकीर्णता विकसित हुई और लोग आपस में झगड़ने लगे हैं। राहुल सांकृत्यायन कहते हैं, 'इसने हमारी शक्ति को विभाजित कर दिया है, हमारे समाज की जड़ें खोखली कर दी है। जाति-पाँति की व्यवस्था के कारण हमने अपनों को सभ्य देशों की दृष्टि में नीचे गिरा लिया है। भारत को शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए यहाँ से जाति-पाँति का भेद-भाव मिटाना अत्यावश्यक है। ' राहुल जी ने अपने उपच्यासों में भूत-पिशाचों और पीर पैगम्बरों की कल्पना का विरोध किया है। उन्होंने कहा है कि विज्ञान के इस युग में कुरीतियों के प्रति आस्थावान होना मूर्खता के सिवा और कुछ नहीं है। राहुल जी ने बाल-विवाह , वृद्ध-विवाह और अनमेल विवाह जैसी कुप्रथाओं को सामाजिक कलंक बताया है।

उनका मत है कि विवाह सम्बन्धी विषयों में पुरूषों की नहीं , स्त्रियों कि इच्छा का भी ध्यान रखना चाहिए। भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के लिए वे रुढियों के अन्धानुकरण से परहेज की बात करते हैं। उनके अनुसार अतीत तभी तक मूल्यवान है जब तक वह भविष्य के विकास में सहायक है। अतः इन कुरीतियों से बचने के साधन के रूप में वे शिक्षा तथा वैज्ञानिक साधनों के प्रयोग पर बल देते हैं।

राहुल सांकृत्यायन साम्यवादी विचार के साहित्य सेवी हैं। श्रमिकों और शोषितों के प्रति वे सहानुभूति का भाव ही रखते हैं बल्कि आगे बढ़कर उनके पक्षधर भी हैं। वे शोषण और शोषक दोनों के घोर विरोधी है। उनका मानना है कि मजदूरों को उनके काम के बदले प्राप्त होने वाली मजदूरी उनके द्वारा किए गये श्रम के बराबर नहीं है। शोषक वर्ग अपनी विलासिता को बरकरार रखने के लिए मजदूरों का श्रम शोषण करते हैं। राहुल सांकृत्यायन का मानना है कि आर्थिक विषमता के लिए किसी एक व्यक्ति को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। जब तक परिस्थितियों को बदला नहीं जाएगा , आर्थिक विषमता समाप्त नहीं होगी। इसके लिए लोगों को उदबुद्ध , जागरुक और संगठित प्रयास करना होगा। देश भर के श्रमिकों और शोषितों को एक होना होगा। एक दिन शोषकों का अंत अवश्य होगा और भूमि पर स्वर्ग अवश्य उतरेगा। ' इस संदर्भ में प्रसिद्ध विचारक कार्ल मार्क्स को हम याद कर सकते हैं। वे संसार के पहले ऐसे प्रबुद्ध और क्रांतिकारी विचारक हैं जिन्होंने 'दुनिया के मजदूरों एक हो ' कहकर शोषितों की वकालत की थी।

राहुल जी को भी जनशक्ति पर विश्वास है। इस शक्ति को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए वे व्यक्तिगत ईर्ष्या और हिंसा से परहेज करने की बात करते हैं। वे यह मानते हैं कि समाज की सभी वस्तुओं पर व्यक्तियों के स्थान पर समाज का अधिकार होना चाहिए। अर्थात् समाज और संसाधनों में वैयक्तिकता के स्थान

पर समूह का समान अधिकार होना चाहिए। राहुल का मानना है , 'साम्यवाद की स्थापना के लिए किये गये प्रयत्न विफल नहीं होंगे। ऐसा समय अवश्य आयेगा , जब सभी लोग समता का अनुभव करते हुए सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे।

साम्यवाद की स्थापना के लिए वैयक्तिकता के प्रश्न पर तो उन्होंने यहाँ तक कह दिया है कि विवाह प्रथा को समाप्त करते हुए स्त्री और पुरुष को स्वच्छन्द रहने की छूट मिलनी चाहिए। संतानोत्पत्ति होती रहे किन्तु कोई स्थाई रूप से पति-पत्नी न रहें। राहुलजी के ये विचार 'मधुर स्वप्न ' उपन्यास में मज्दकियों द्वारा अभिव्यक्त हुए हैं। राहुल जी का यह सिद्धान्त मार्क्सवाद और साम्यवाद से मेल नहीं खाता है। वैयक्तिकता की भावना की समाप्ति कभी विवाह-प्रथा के निषेध से संभव नहीं है। क्योंकि विवाह मनुष्य की निरंकुशता पर अंकुश लगाने का कार्य करता है और समाज को स्थायित्व प्रदान करता है। अतः वैयक्तिकता को समाप्त करने के लिए भोगवादी जीवन दर्शन से परहेज करना होगा।

उद्देश्य :

मनुष्य के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है स्वतंत्रता। राहुल सांकृत्यायन मनुष्य के लिए स्वतंत्रता और समानता के अधिकार को आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार , 'मानव, स्वार्थवश दूसरे मानव के साथ क्रूरता का व्यवहार करता है। अपने सुख के लिए मानव , मानव को परतंत्र बनाता है। यही भावना साम्राज्यवादी प्रवृति का मूल कारण बनती है और निरंकुश शासकों को दूसरे देशों की स्वतंत्रता को हड़पने के लिए प्रेरित करती है। ' राहुल जी साम्राज्यवादी प्रवृति के विरोधी साहित्यकार थे। उन्होंने कहा था कि साम्राज्यवाद, पूँजीवाद की चरम सीमा है। उनके विचार से जनतंत्र आदमी के अन्दर आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की भावना विकसित करता है। गणतंत्र

में वैयक्तिक भावनाओं का सम्मान किया जाता है और आदमी को क्षमता विकसित करने का अवसर मिलता है। राजतंत्र में जन भावनाओं का दमन किया जाता है। अतः गणतंत्र को वे इसलिए मानव के विकास में सहायक मानते हैं कि उसमें लोगों को गण का सदस्य चूनने की आजादी होती है। वे उसी को चुनते है जो उनके लिए अपनी आवाज बुलन्द करता है। साथ ही उन्हें हटा भी देते हैं जो उनके अधिकारों के साथ खेलते हैं। यही कारण है कि राहुल सांकृत्यायन आदर्श समाज की स्थापना के लिए गणतंत्रीय शासन प्रणाली का अनुमोदन करते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राहुल जी ने अपने व्यापक अध्ययन और चिंतन तथा यायावरी के दौरान जीवन के जितने रूप देखें और उन रूपों से जो दृष्टिकोण उत्पन्न हुए वे विस्तृत हैं। यही दृष्टिकोण इनके उपन्यासों में अभिव्यक्त हुए हैं जो उनके उपन्यासों के अध्ययन और मनन करने से हमें प्राप्त होते हैं। अस्तु उनके इस व्यापक जीवन दर्शन पर शोध और अध्ययन कर विद्वानों और समाज के समक्ष उपस्थापित करना आवश्यक है।

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन दर्शन के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझने का प्रयास किया जायेगा और शोध-प्रबंध तैयार कर अकादमिक और समाज के सामने उपस्थापित किया जायगा।

अतः शोध प्रबंध के रूप में इस तथ्य को अलग से रेखांकित किया जायेगा कि राहुल सांकृत्यायन का जीवन के संदर्भ में क्या-क्या दृष्टिकोण हैं ? वे किस तरह के जीवन दर्शन और जीवन पद्धति के पक्षधर थे।

शोध की आवश्यकता / महत्त्व :

प्रस्तावित शोध विषय पर शोध की आवश्यकता इस कारण से है कि राहुल जी पर अब तक कुछ शोध तो हुए हैं और उस शोध में प्रसंगवश उनके जीवन दर्शन का संक्षिप्त विवेचन तो किया गया है किन्तु स्वतंत्र रूप से उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन दर्शन पर अब तक कोई शोध नहीं किया जा सका है। फलस्वरूप उनके जीवन दर्शन का विस्तृत विवेचन और विश्लेषण नहीं है। अतः प्रस्तावित शोध प्रबंध इस विषय को प्रकाश में लाने का एक प्रयास है। एतदर्थ इस दिशा में अकादमिक क्षेत्र में भी यह शोध-प्रबंध मिल का पत्थर साबित होगा।

<u>पूर्व में किये गये एतद् संबंधी शोध कार्य</u> :

अब तक राहुल सांकृत्यायन से संबंधित कुछ शोध कार्य हुए हैं और कुछ आलोचनात्मक निबंध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। यथा : (1) कथाकार राहुल सांकृत्यायन : आलोचनात्मक अध्ययन : दिनेश दत्त चतुर्वेदी , सागर विश्वविद्यालय, 1971, (2) राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में मार्क्सवाद : धनपति सिंह, बुंदेलखंड, 1995, (3) राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य का अध्ययन : जय राम, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, (4) राहुल सांकृत्यायन के दार्शनिक विचार : मंजुलिका सिंह , गढ़वाल विश्वविद्यालय , 1999 आदि। प्रस्तावित शोध विषय पर अब तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है।

किसी विश्वविद्यालय के लिए पी.-एच० डी० की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध को नवीन और मौलिक माना जा सकता है। अतः इसमें नवीन दृष्टि और नये चिन्तन के साथ शोध-प्रबंध में तथ्यों को उपस्थापित कर प्रस्तुत किया जायगा।

<u>शोध कार्य के स्रोत</u> :

(क) उपन्यास (आधार ग्रंथ)

1. जीने के लिए - राहुल सांकृत्यायन
2. सिंह सेनापति - राहुल सांकृत्यायन
3. जय यौधेय - राहुल सांकृत्यायन
4. विस्मृत यात्री - राहुल सांकृत्यायन
5. मधुर स्वप्न - राहुल सांकृत्यायन
6. दिवोदास - राहुल सांकृत्यायन

(ख) आलोचना :

1. ऐतिहासिक उपन्यास आर उपन्यासकार - डॉ. गोपीनाथ तिवारी
2. वैज्ञानिक भौतिकवाद - राहुल सांकृत्यायन
3. विचार और अनुभूति - डॉ. नगेन्द्र
4. हिन्दी उपन्यास - डॉ. सुषमा धवन
5. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - डॉ. त्रिभुवन सिंह
6. दर्शन-दिग्दर्शन - राहुल सांकृत्यायन

<u>शोध की सीमा :</u>

राहुल सांकृत्यायन स्वाधीन प्रतिभा के धनी उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों में जो अनुभव और जीवन दर्शन व्यक्त हुए हैं वे उनके व्यापक अध्ययन, मनन और चिंतन तथा यात्रानुभव के प्रमाण हैं। उनका जीवन-दर्शन विभिन्न संस्कृतियों का सम्मिलन है। उनके इसी विस्तृत विद्वता के आधार स्रोत से उनका जीवन-दर्शन मौलिक रूप से उदभावित है। यह दर्शन उनके उपन्यासों से इतर विधाओं में भी व्यक्त हुआ है। अतः प्रस्तावित शोध-प्रबंध में अनावश्यक विस्तार से बचने के लिए विषय से संबंधित विचारों और संदर्भों को ही मुख्य रूप से शामिल किया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर ही अन्य संदर्भों का उपयोग किया जाएगा।

<u>शोध की पूर्व कल्पना / संभावित निष्कर्ष :</u>

यह तथ्य 'विषय का महत्व ' में ही उद्घाटित है कि उपन्यास जीवन कि व्याख्या है। इस व्याख्या के पीछे उपन्यासकार का एक दृष्टिकोण काम करता है। यह दृष्टिकोण उनके अध्ययन के आधार और व्यापक अनुभव के आधार पर विकसित होता है। उसी दृष्टिकोण के अनुरूप जीवन की व्याख्या उपन्यासकार का 'जीवन-दर्शन' होता है। अध्ययन के क्रम में शोधार्थी को राहुल के उपन्यासों में वर्णित साम्राज्यवादी सोच के विपरीत समाजवादी और गैर पारम्परिक नवीन विचारों नें चौंकाया है। विषय चयन के पीछे राहुल के विचारों की यही नवीनता कारण बनी है।

शोध के क्रम में शोधार्थी द्वारा शोधारंभ करने से पहले विषय के विभिन्न पहलुओं से संबंधित सामान्यानुमान लगा लिया जायेगा और एक स्पष्ट रुपरेखा तैयार कर ली जायगी। इसका उद्धेश्य आगामी अध्ययन को एक निश्चित दिशा देना होगा। इसका यह लाभ होगा कि शोधार्थी यत्र- तत्र और अन्यत्र न भटककर निश्चित आधार पर तथ्यों का संग्रह और संचयन करेंगे। अतः इस आधार पर तैयारी करने से संभावित निष्कर्ष के सार्थक और सोद्देश्य होने की विश्वसनीयता असंदिग्ध हो सकती है।

<u>शोध की प्राविधि :</u>

प्रस्तावित शोध प्रबंध में उपर्युक्त और संभावित वृहद् स्रोत ग्रन्थों के संकलन कर गहन अध्ययन के क्रम में शोधार्थी का उद्देश्य होगा कि वह परीक्षण, मूल्यांकन और शोध निष्कर्षो के स्थापनार्थ शोध प्रविधि के दोनों कारकों का उपयोग करेंगे। शोधार्थी द्वारा आगमन पद्धति के माध्यम से तथ्यों का चयन एवं संकलन और संग्रहण तथा गहन अनुशीलन और गंभीर चिंतन के उपरांत निममन पद्धति द्वारा मंथन के पश्चात तार्किक विवेचन एवं विश्लेषण द्वारा शोध-निष्कर्षो की स्थापना की जायगी। इस महत्वपूर्ण कार्य में विभिन्न शोध संस्थानों और पुस्तकालयों में जाकर अध्ययन किया जायगा।

<u>प्रस्तावित अध्याय / अयायीकरण :</u>

वैसे तो शोध कार्य की समाप्ति के पश्चात ही किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है। इसके पूर्व, निष्कर्ष निर्माणाधीन होकर चलता रहता है। अतः ठोस निष्कर्ष की प्रबल संभावना के साथ प्रस्तुत शोधकार्य निम्न अध्यायों में बाँटकर पूरा किये जाने की कार्य योजना प्रस्तावित है।

शोध शीर्षक : "राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन दर्शन"

भूमिका

प्रथम अध्याय : जीवन-दर्शन : अवधारणा और स्वरूप

द्वितीय अध्याय : राहुल सांकृत्यायन का जीवन और साहित्य

तृतीय अध्याय : राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में मानव जीवन के विविध आयामः (क) यात्रा (ख) प्रेम (ग) धर्म (घ) सामाजिक रूढ़ियाँ और राहुल सांकृत्यायन के

विद्रोही विचार

चतुर्थ अध्याय : राहुल सांकृत्यायन के साम्यवादी विचार

पंचम अध्याय : राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में अभिव्यक्त गणतंत्रात्मक विचार

षष्ठ अध्याय : राहुलजी के जीवन-दर्शन का मूल्यांकन

उपसंहार

<u>संभावित संदर्भ-ग्रन्थ सूची :</u>

1. हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन - डॉ. गणेशन
2. हिन्दी उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय विवेचन - डॉ. नारायण अग्निहोत्री
3. कुछ विचार - प्रेमचन्द
4. उपन्यास- तत्व एवं रूप विधान - श्रीनारायण अग्निहोत्री
5. विचार और विवेचन - डॉ० नगेन्द्र

6. ऐतिहासिक उपन्यास आर उपन्यासकार - डॉ. गोपीनाथ तिवारी

7. वैज्ञानिक भौतिकवाद - राहुल सांकृत्यायन

8. विचार और अनुभूति - डॉ. नगेन्द्र

9. हिन्दी उपन्यास - डॉ. सुषमा धवन

10. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - डॉ. त्रिभुवन सिंह

11. दर्शन- दिग्दर्शन - राहुल सांकृत्यायन

पत्र, पत्रिकाएँ, पत्राचार, साक्षात्कार आदि ।

नोटः-यह शोध/कार्य की प्रारंभिक प्रक्रिया है. अध्ययन एवं अनुसंधान के क्रम एवं अनुभव जन्य स्थिति में उसमें यत्किंचित परिवर्तन संभावित है।

शोध निर्देशक
डॉ0 आर0 बी0 यादव ''आर्य''
अध्यक्ष हिन्दी, विभाग
एल0 सी0 एस0 कॉलेज, दरभंगा

बिनीता कुमारी
E2209007
शोधार्थी